

झारखण्ड का इतिहास : एक परिचय

प्राचीन काल से आधुनिक झारखण्ड के निर्माण तक की ऐतिहासिक यात्रा

अध्ययन उद्देश्य: यह दस्तावेज़ झारखण्ड के प्राचीन इतिहास, जनजातीय संस्कृति, औपनिवेशिक संघर्ष और राज्य निर्माण के प्रमुख चरणों का संक्षिप्त एवं सारगर्भित परिचय प्रदान करता है।

1. परिचय एवं भौगोलिक अवस्थिति

झारखण्ड भारत का एक प्रमुख भू-आबद्ध (Landlocked) राज्य है, जिसे "वनो की भूमि" के रूप में जाना जाता है। छोटा नागपुर का पठार और संथाल परगना क्षेत्र इस राज्य का मुख्य भौगोलिक हिस्सा बनाते हैं। यहाँ की प्राकृतिक बनावट, घने जंगल, नदियाँ (जैसे दामोदर, स्वर्णरेखा, सोन) और प्रचुर खनिज संपदा ने प्राचीन काल से ही इस क्षेत्र के इतिहास को प्रभावित किया है।

ऐतिहासिक रूप से, यह क्षेत्र दुर्गम जंगलों और पहाड़ियों से घिरा होने के कारण लंबे समय तक बाहरी साम्राज्यों के पूर्ण नियंत्रण से दूर रहा, जिससे यहाँ की अनूठी जनजातीय संस्कृति और स्वशासन प्रणालियाँ विकसित हुईं।

2. प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric Period)

झारखण्ड में प्रागैतिहासिक काल के साक्ष्य प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। हजारीबाग (इस्को, सितागढ़ पहाड़), रांची, सिंहभूम और पलामू जैसे जिलों में पाषाण कालीन उपकरण, शैल चित्र (Rock Paintings), और मृदभांड प्राप्त हुए हैं:

- पुरापाषाण काल:** इस काल के औजार झारखण्ड के विभिन्न नदी घाटियों से मिले हैं।
- मध्य एवं नवपाषाण काल:** हजारीबाग का 'इस्को' (Isko) गाँव शैल चित्रों और नक्काशीदार पत्थरों के लिए विश्व प्रसिद्ध है।
- ताम्र पाषाण काल (Chalcolithic Age):** सिंहभूम क्षेत्र तांबे के औजारों के निर्माण का प्रमुख केंद्र था।

झारखण्ड का इतिहास : काल-क्रमानुसार विवरण

3. प्राचीन काल और प्रमुख राजवंश

प्राचीन ग्रंथों (जैसे ऐतरेय ब्राह्मण) में इस क्षेत्र को 'पुण्ड्र' या 'झारखंड' के आरंभिक रूपों से संबोधित किया गया है। गुप्त काल और उसके बाद इस क्षेत्र में क्षेत्रीय राजवंशों का उदय हुआ:

नागवंश (फणि मुकुट राय)

छोटा नागपुर क्षेत्र में नागवंश की स्थापना प्रथम शताब्दी में हुई। सुतियांबे इसकी पहली राजधानी थी।

सिंहभूम के सिंह राजवंश

पोर्टहाट और धालभूम क्षेत्रों में राजपूत शासकों और स्थानीय राजाओं का प्रभाव रहा।

4. मध्यकाल एवं ब्रिटिश विरोधी जन-विद्रोह

मुगल काल के दौरान अकबर और जहांगीर के शासनकाल में मुगलों का संपर्क इस क्षेत्र से हुआ। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रवेश के साथ ही यहाँ के आदिवासियों का शोषण बढ़ा, जिसके परिणामस्वरूप भारत के स्वतंत्रता संग्राम से भी पहले महान जनजातीय विद्रोह हुए:

विद्रोह का नाम	अवधि	प्रमुख नेतृत्वकर्ता	मुख्य विशेषता
ढाल विद्रोह	1767-1777	जगन्नाथ ढाल	अंग्रेजों के विरुद्ध झारखण्ड का पहला विद्रोह।
छोड़ विद्रोह (चुआड़)	1769-1805	दुर्जन सिंह, जगन्नाथ पातर	भूमिजों द्वारा मालगुजारी और प्रशासनिक नीतियों के विरुद्ध।
कोल विद्रोह	1831-1832	बिन्दराय, सिंहराय, जोआ भगत	दिकुओं (बाहरी लोगों) द्वारा भूमि हड़पने के खिलाफ।
संथाल हूल	1855-1856	सिद्धू, कान्हू, चांद, भैरव	महाजनों व अंग्रेजों के शोषण के विरुद्ध विशाल क्रांति।
उलगुलान (मुंडा विद्रोह)	1895-1900	भगवान बिरसा मुंडा	साम्राज्यवाद और बेगार प्रथा के विरुद्ध ऐतिहासिक संघर्ष।

5. पृथक झारखण्ड राज्य का आंदोलन

वर्ष 1912 में 'ढाका छात्र संघ' से शुरू हुआ झारखण्ड का अलग राज्य का सपना जे.ए.एम. (JMM), आजसू (AJSU) और विभिन्न छात्र संगठनों के लंबे संघर्ष के बाद **15 नवम्बर 2000** को पूरा हुआ, जब भारत के 28वें राज्य के रूप में झारखण्ड का उदय हुआ।